Asian Journal of Multidisciplinary Studies

ISSN: 2321-8819 (Online)
2348-7186 (Print)
Impact Factor: 1.498
Vol.4, Issue 9, August 2016

मालवा के आंचलिक जनजागरण में मध्यभारत के प्रथम मुख्यमंत्री पं. लीलाधर जोशी (शुजालपुर) का योगदान

डॉ. श्वेता चौहान
अतिथि विद्वान (इतिहास)
शा.स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मन्दसौर (म.प्र.)

सार : प्रस्तुत लेख मे मध्यभारत के प्रथम मुख्यमंत्री पण्डित लीलाधर जोशी ने एक गरीबो के विकास के लिऐ काम, श्री रामचन्द्र चौबेजी ने पण्डित लीलाधर जोशी, श्री काशी विश्वनाथ आदि के सहयोग से 'स्नेही मित्र मण्डल' नामक संस्था स्थापन करके जनजागरण का कार्य, किसान भाइयों को संगठित करने एवं गांवों में जनजागरण का कार्य, शुजालपुर में स्वतंत्रता संघर्ष इ. के माध्यम से कार्य करके मालवा के आंचलिक जनजागरण मे योगदान क्या है इसका अभ्यास प्रस्तुत किया है ।

किवर्ड : में मध्यभारत के प्रथम मुख्यमंत्री, पं. लीलाधर जोशी, मालवा

''राजनीति कोई साधु सन्तों का अखाड़ा या आश्रम तो होती नहीं मगर इतना जरूर है कि राजनीति में पद की कद्र नहीं बल्कि आदमी के काम से उसका नाम जाना जाता है।''

पण्डित लीलाधर जोशी गरीबों के मसीहा थे। शुजालपुर का हित, चिन्तन उनका स्वभाव बन गया था। नागरिक सुविधाएँ और रचनात्मक निर्माण कार्य शुजालपुर क्षेत्र को उन्हीं के प्रयासों से मिले है। वे एक कुशल प्रशासक, विचारक, राजनेता, कर्तव्यनिष्ठ, देशभक्त, निःस्वार्थ, समाजसेवी, शालीन व्यक्तित्व के धनी, जुझारू, स्वतंत्रता संग्राम सैनानी एवं सहज सरल मिलनसार व्यक्ति थे।[1]

श्री रामचन्द्र चौबेजी ने पण्डित लीलाधर जोशी, श्री काशी विश्वनाथ आदि के सहयोग से 'स्नेही मित्र मण्डल' नामक संस्था की स्थापना की थी। 'स्नेही मित्र मण्डल' संस्था सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में राजनीतिक भूमिका निभाकर जनजागरण एवं देशसेवा का कार्य कर रही थी। इस संस्था के द्वारा एक वाचनालय भी चलाया जाता था। 'स्नेही मित्र मण्डल' द्वारा शारदा उत्सव, गणेश उत्सव, होली उत्सव का आयोजन कर विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों के माध्यम से नगर की जनता में देश भक्त का प्रचार किया जाता था।[2]

स्थानीय स्तर पर किसान भाइयों को संगठित करने एवं गांवों में जनजागरण का कार्य करने के लिये 'किसान संघ' का गठन किया गया। इस किसान संघ के नियमित सम्मेलन आयोजित किये जाते थे एवं किसानों की विभिन्न समस्याओं को इसके माध्यम से उठाया जाता था। ग्रामीण अंचल में देशभक्ति की भावना प्रचार व प्रसार करने में किसान संघ की महत्ती भूमिका रही। लोकमान्य तिलक द्वारा सार्वजनिक गणेश उत्सव के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन हेतु जनजागृति का श्रीगणेश किया जा चुका था। उज्जैन में भी गणेश उत्सव पर प्रसिद्ध देशभक्त नेताओं के भाषण आयोजित किये जाते थे। पण्डित लीलाधर जोशी और उनके साथीगण इन भाषणों की सारी व्यवस्था करते थे। इन देशभक्त नेताओं के भाषणों को सुनकर श्री लीलाधर जोशी के मन में 'देशप्रेम' की भावना और बढ़ जाती थी।[3]

'सार्वजनिक सभा'' उज्जैन की एक समाजसेवी संस्था के रूप में पंजीयत थी। अतः इस संस्था के माध्यम से ग्वालियर रियासत में राजनीतिक गतिविधियों का संचालन होता था। ग्वालियर रियासत में कांग्रेस सार्वजनिक सभा के नाम से कार्य करती थी। पण्डित लीलाधर जोशी ग्वालियर रियासत सार्वजनिक सभा के अध्यक्ष थे। बाद में यही सार्वजनिक सभा ग्वालियर स्टेट कांग्रेस बन गयी और पण्डित लीलाधर जोशी इसके अध्यक्ष के रूप में ग्वालियर रियासत के मुख्यमंत्री बने एवं जब मध्यभारत का निर्माण हुआ तब ग्वालियर स्टेट कांग्रेस का नाम मध्यभारत स्टेट कांग्रेस हो गया।[4]

ग्वालियर राज्य में कांग्रेस के स्थान पर उसी की अनुवर्ती संस्था के रूप में सार्वजनिक सभा राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय थी। पण्डित लीलाधर जोशी ने राज्य के सुदूर क्षेत्रों में इसकी शाखायें स्थापित की। सन् 1939 में सार्वजनिक सभा ने उत्तरदायी शासन की मांग की तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का तिरंगा ध्वज अपनाया। सन् 1937 में विदिशा में पारित प्रस्ताव के अनुरूप जब सार्वजनिक सभा का वर्चस्व पूरे क्षेत्र में स्थापित हो गया तब 1939 ई. एवं 1940 ई. में शाजापुर जिले में दो राजनैतिक सम्मेलन आयोजित किये गये ।इन सम्मेलनों से सम्पूर्ण जिले में जनजागरण की अपूर्व लहर फैल गयी। इन सम्मेलनों के उपरांत पण्डित लीलाधर जोशी ने निकटवर्ती रियासतों जैसे – राजगढ़, नरसिंहगढ़, खिलचीपुर आदि रियासतों में अपने साथियों के साथ जनजागरण का कार्य किया।[5]

शुजालपुर में स्वतंत्रता संघर्ष की शुरूआत वास्तविक रूप से विदेशी वस्त्रों की होली जलाने से हुई। शुजालपुर में पण्डित लीलाधर जोशी, श्री सौभाग्यमल जैन तथा ठाकुरलालजी चौधरी के नेतृत्व में बड़े बाजार में कुएँ के पास विदेशी वस्त्रों की होली जलायी गई। शुजालपुर के सभी गणमान्य व्यापारियों ने तथा अन्य ने अपनी कीमती वस्त्रों की इस होली में आहूति दी। श्री केसरीमलजी जैन, श्रीरामलालजी पीपलवाले, श्री गेंदमलजी बोरवाले, श्री किशनलालजी

चौधरी, श्री मगनलालजी त्रिपोलियावाले, श्री केसरीमलजी बजाज, श्री रामगोपाल श्रीवास्तव, श्री शिवलालजी चौधरी, श्री गणपतसिंह जैन एवं कई अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया। आंदोलन के दिनों में प्रतिदिन प्रभात फेरी, देशभक्त के गीत एवं खादी के प्रचार ने जनमानस में राजनैतिक चेतना का प्रादुर्भाव हुआ।[6]

खाचरोद तहसील के संघर्ष पूर्ण स्वतंत्रता आंदोलन में श्री भैरव भारतीय, श्री रामचंद्र रघुवंशी, श्री रामचंद्रनवाल, पं. हरिप्रसाद शर्मा विशेष रूप से सक्रिय थे।

स्वतंत्रता आंदोलन में पुरूषों के साथ महिलाओं ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उज्जैन में श्रीमती मदनदेवी नवाल, श्रीमती रतनबाई और श्रीमती देवीबाई चौबे के प्रयास विशेष उल्लेखनीय रहे।

2 सितम्बर 1942 के अवंतीलाल जैन एवं उनके साथियो को आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के आरोप में मुंगावली जेल भेजा गया, इन लोगों को बचाने के लिये पण्डित लीलाधर जोशी एवं उनके साथियों ने मिलकर मुकदमा लड़ने के लिये श्री के.ए. चीतले वकील को मुकदमा लड़ने के लिये तय किया एवं उन्हें रिहा करवाया।[7]

23 अगस्त 1942 ई. को भैलसा में सार्वजनिक सभा की जनरल कमेटी ने उत्तरदायी शासन की स्थापना और अंग्रेज सरकार से सम्बंध विच्छेद करने का प्रस्ताव पारित किया जिसकी प्रतिलिपि ग्वालियर महाराज को भेजी गयी। 29 व 30 जून 1943 ई. को एक समझौते के अंतर्गत 1942 के राजनैतिक कैदियों को मुक्त करा दिया गया।

14 जून 1946 ई. को सभा की कार्यसमिति ने शीघ्र ही उत्तरदायी शासन की घोषणा करने विधानपरिषद नियुक्त करने की मांग की। अक्टूंबर 1946 ई. मे महाराज ने उत्तरदायी शासन का लक्ष्य स्वीकार करने की घोषणा की।

1 नवम्बर 1946 ई. को स्टेट कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसकी अध्यक्षता का दायित्व पण्डित लीलाधर जोशी को सौंपा गया। महाराजा उत्तरदायी शासन की घोषणा करने के बावजूद उसको अमल करने से टाल रहे थे। स्टेट कांग्रेस के अधिवेशन में यह घोषणा की गई कि 31 दिसम्बर 1946 ई. तक यदि उत्तरदायी शासन लागू नहीं हुआ तो संघर्ष आरंभ किया जायेगा लेकिन इसकी नौबत नहीं आई। 24 जनवरी 1948 को पण्डित लीलाधर जोशी के नेतृत्व में नया मंत्रिमण्डल अस्तित्व में आया, जिसमें पण्डित लीलाधर जोशी ने बाबु तखतमल जैन, श्री राधेलाल व्यास, श्री सुन्नूलाल और हामिद अली शाह को सम्मिलित किया।[8]

सरदार पटेल व वी.पी. मेनन के मार्गदर्शन में जिन राज्यों ने भारतीय संघ में विलय होना स्वीकार किया था उनमें राजस्थान के जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, कोटा, बूंदी, अलवर, प्रतापगढ़ और बांसवाड़ा प्रमुख थे। वर्तमान मध्यप्रदेश में मध्यभारत के अलावा छत्तीसगढ़ बुंदेलखण्ड, बघेलखण्ड की रीवा, सतना आदि रियासतों का विलीनीकरण किया गया था।

सन् 1948 के अंत में केन्द्रीय सरकार के निर्देशानुसार परम् श्रद्धेय श्री वल्लभभाई पटेल के निर्देशन में एवं प्रेरणा से इन सब छोटे बड़े राज्यों को मिलाने पर एक बड़ा राज्य 'मध्यभारत' का निर्माण हुआ। 'मध्यभारत' राज्य का उद्घाटन सरदार वल्लभ भाई पटेल के हाथों से हुआ था। इस राज्य के राजप्रमुख महाराजा ग्वालियर माधवरावजी शिन्दे बनाये गये तथा पण्डित लीलाधर जोशी मध्यभारत राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री चुने गये।

प्रारंभ में पण्डित लीलाधर जोशी ग्वालियर राज्य से मुख्यमंत्री बने। 22 राज्यों से बने इस मध्यभारत का जब एकीकरण हुआ तो सरदार वल्लभ भाई पटेल के साथ नई दिल्ली में मध्यभारत की सारी चर्चा एवं बातचीत के समय मुख्य प्रतिनिधि के रूप पण्डित लीलाधर जोशी ही उपस्थित थे। उस समय के राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में पण्डित लीलाधर जोशी का नये राज्य का मुख्यमंत्री बनना उनके राजनैतिक प्रतिष्ठा, कुशलता एवं लोकप्रियता का प्रमाण है।

मध्यभारत संघ बन जाने के पश्चात् एक बड़े राज्य के प्रधानमंत्री होने के कारण संघ का प्रधानमंत्रित्व उन्होंने संभाला। देशी राज्यों के साथ हुए अनुबंध के अनुरूप संघ में विलीन राज्यों की आबादी के अनुपात से सदस्य लेकर श्री जोशीजी ने अंतरिम विधानसभा का निर्माण किया था। पण्डित लीलाधर जोशी ने 24 जनवरी 1948 ई. को जब ग्वालियर स्टेट के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली तब वह ग्वालियर स्टेट कांग्रेस के अध्यक्ष थे।9

पण्डित लीलाधर जोशी ने ग्वालियर राज्य के शासन का कार्यभार 24 जनवरी 1948 को सम्हाला तथा मध्यभारत का कार्यभार 3 जून 1948 ई. को सम्हाला। मध्यभारत के निर्माण के समय विभिन्न 22 देशी रियासतों जिनमें ग्वालियर, इन्दोर, धार, देवास, झाबुआ, रतलाम, भोपाल, अलीराजपुर, सैलाना, राजगढ़, खिलचीपुर, जोबट, रामपुरा आदि को मिलाकर एक प्रांत का निर्माण करना कितना कठिन होता है, इसका अहसास पं. जोशीजी को तब हुआ जब वह मुख्यमंत्री के रूप में सरदार पटेल के मार्गदर्शन में इस कार्य में सफल हुयें।10

देश की आजादी के तत्काल बाद ही पण्डित लीलाधर जोशी मुख्यमंत्री बन गये इसलिए पुर्नगठन सम्बंधी समस्याओं को सुलझाने में उनका अधिकांश कार्यकाल व्यतीत हुआ। उस समय विकास के लिये पंचवर्षीय योजनाएँ प्रारंभ नहीं हुयी थी लेकिन उस समय जागीरदारी प्रथा की समाप्ति तथा जमींदारी प्रथा की समाप्ति सम्पूर्ण भारतवर्ष में पण्डित लीलाधर जोशी के कार्यकाल में ही हुई। उन्हीं के कार्यकाल में किसानों को जमींदारों के शोषण से मुक्ति मिल गई।

व्यक्तिगत रूप से पण्डित लीलाधर जोशी का कोई भी गुरू नहीं था। किंतु राजनीति में श्री जोशीजी के विचारों को सार्थक किया है गांधीजी के दर्शन ने और पण्डित नेहरू के समाजवादी चिंतन ने। श्री सरदार पटेल के संकल्प दृढ़ता और फिरोज गांधी की स्पष्टवादिता ने भी पण्डित लीलाधर जोशी के मन पर गहरा प्रभाव डाला।

सन् 1952–57 ई. तक के आम चुनावों में शाजापुर–राजगढ़ सीट से हुई लोकसभा चुनाव में भारत की संसद के सदस्य चुने गये। पण्डित लीलाधर जोशी ने विशाल हिन्दी भाषा–भाषी मध्यप्रदेश बनाने के लिये अथक प्रयत्न किये। जब मध्यभारत का मध्यप्रदेश बना तो उसके लिऐ प्रांतीय कांग्रेस की मिटिंग गांधी भवन में बुलाई गई उसमें श्री जोशीजी ने मध्यभारत को एकत्रित रखने के लिए प्राव्हिंशियल कांग्रेस कमेटी में प्रस्ताव रखा था और पण्डित लीलाधर जोशी के प्रयासों द्वारा यह प्रस्ताव पास हो गया तथा दिल्ली में पण्डित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, गोविंद वल्लभ पन्त आदि के काफी प्रयत्नों के बाद मध्यप्रदेश बन गया।11

देशी राज्य ग्वालियर में उत्तरदायी शासन की स्थापना से लेकर मध्यभारत संघ के निर्माण व कालांतर में मध्यप्रदेश की रचना तक की ऐतिहासिक यात्रा में पण्डित लीलाधर जोशी की महत्वपूर्ण सक्रिय भूमिका रही है। देश की आजादी, एकता, अखण्डता और चहुंमुखी विकास के लिये समर्पित उनका जीवन हम सबके लिये चिर प्रेरणास्पद है।

सदंर्भ ग्रंथ सूची –

1. जितेन्द्र प्रसाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सौ वर्ष, प्रकाशन ए.जे. प्रिंटर्स, पृ. क्र. 123
2. द्विवेदी डॉ. हरिहर निवास, मध्यभारत का इतिहास, खण्ड 4, पृष्ठ क्र. 95
3. जैन सौभाग्यमल, अभिनंदन ग्रंथ, सौभाग्यिका से उद्धृत।
4. जितेन्द्र प्रसाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सौ वर्ष, प्रकाशन ए.जे. प्रिंटर्स, पृ. क्र. 123
5. स्मृति सम्मुच्चय परिषद, इंदौर कांग्रेस सोविनियर बोर्ड, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 62 वां अधिवेशन, 1957, पृष्ट क्र. 37
6. मिश्र एवं भावसार, मालवांचल शाजापुर, पृष्ठ क्र. 86
7. पण्डित लीलाधर जोशी, अभिनदंन ग्रंथ, शुजालपुर, लीलाद्रिका से उद्धत, 1988
8. शर्मा गौतम, स्मारिका कांग्रेस शताब्दी (1985) समिति मध्यप्रदेश प्रकाशन, नई दुनिया प्रिंटरी, इंदौर, पृ. 46
9. उपाध्याय डॉ. शचीन्द्रप्रसाद, माधवराव सिंधिया, भूतपूर्व ग्वालियर राज्य और उसका प्रकाशन, पृष्ठ क्र. 87
10. द्विवेदी डॉ. हरिहर निवास, मध्यभारत का इतिहास, खण्ड–4, पृष्ठ क्र. 319
11. अंतरंग, शाजापुर जिला पुरातत्व संघ, 1990 पृ. 18